बेसुधि व मग्न रहा करते खाने पीने की सुधि भी विशेष करके भूलिजाते मन, प्राण, बुद्धि, सुधि और जितनी चित्त की वृत्ति है सब रूप अनूप के चिन्तन में ऐसी लगी कि दूसरी ओर कदापि न चलायमान हुई।

कथा काशीश्वर की।

गोसाईं काशीश्वरजी परमभक्त हुये पहिले अवधूत रहे पुरुषोत्तमपुरी में आये व श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के चेले हुये फिर आज्ञा से गुरुके वृन्दावन में आये प्रेम व आनन्दमें मग्न व कृतार्थ होगये थोड़ेही दिनमें उनकी भावना व प्रीति ऐसी विख्यात हुई कि श्रीगोविंददेवजी महाराज की सेवा पूजा उनको मिली। उसी सेवा में रातदिन रहने लगे।

कथा प्रबोधानन्द की।

प्रबोधानन्दसरस्वती संन्यासी चेले श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के परम रसिक भक्त हुये प्रिया प्रियतम का विहार व कुञ्जखेल के रसको अपनी काव्य रचना में ऐसा वर्णन किया कि जिसको पढ़ सुनकर करोड़ों प्रेम व आनन्दमें मग्न हुये व होते हैं। युगलस्वरूप मुखचन्द्र में मनको चकोरकी भांति लगाया और वृन्दावनवास की दृढ़ शिक्षा जगत् को लखाई कि किसी प्रकार वृन्दावन के बाहर न जावें।

कथा लालमती की।

मनुष्यतनु को पाकर जो लाभ होना चाहिये सो लालमतीजी को हुआ कि गौड़स्वामी के चरणकमलों से अन्यत्र किसी ओर चित्त की वृत्ति नहीं जाती रही और लालमतीजी वात्सल्यउपासक जान पड़ती हैं इसी हेतु भक्तमाल में नाभाजी ने गौड़स्वामी की प्रीति से यह पद धरा नहीं तो प्रिया प्रियतम अथवा किशोर किशोरी यह पद धरते। लालमती जी को जैसी प्रीति युगलरूप में थी वैसेही यमुनाजी से व व्रजकी कुञ्जोंसे और वंशीवट इत्यादिक भगवत् के खेलस्थान व व्रजमण्डल से रही व अचलवास श्रीवृन्दावन में करके भक्तिभाव को दृढ़ किया व यद्यपि वात्सल्य उपासना लालमतीजी को रही और गोकुलस्थों की सेवक रहीं परन्तु धर्मनिष्ठा का विश्वास और जिस विधि से वहाँ वास चाहिये सो सब लालमतीजी में रहा इसहेतु धामनिष्ठा में लिखागया।

चौदहवीं निष्ठा।

भगवत् नाम की महिम. जिसमें पाँच भक्तों की कथा हैं।

श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी महाराज के चरणकमलों के षट्कोण रेखा व

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0223
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG